Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

सौन्दर्य लहरी में प्रयुक्त तिङन्त क्रियापदों का विवेचन

Dr. Sunita Kumari*

Assistant Professor, Department of Sanskrit Government College, Nangal Chaudhary, Haryana

सार – संस्कृत भाषा के क्रियापदों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है तिङन्त क्रियापद एवं कृदन्त क्रियापद। ये दोनों प्रकार के क्रियापद दो सार्थक इकाईयों से बनते हैं। प्रथम इकाई को धातु व द्वितीय इकाई को तिङ् अथवा कृत् प्रत्यय कहते हैं। तिङन्त क्रियापद काल या वृत्ति, वाच्य, पुरूष, वचन व पद से अन्वित होने के कारण अनेक प्रकार के होते हैं। संस्कृत भाषा में काल के तीन भेद हैं– यथा वर्तमान काल, भूतकाल एवं भविष्यत काल। पाणिनि ने काल बोधक व वृत्ति बोधक तत्वों को काल की संज्ञा दी है तथा इनकी संख्या दस मानी जाती है। लट्, लिट्, लुट, लृट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ् (वि0लि0, आ0लि0) लुङ्, लृङ्। इनमें पांचवा लेट् लकार केवल वेद में ही मिलता है। लिङ् लकार को दो भागों में बांटा जाता है। जब विधि निमंत्रण, आमंत्रण, अधीष्ट, संप्रश्न, प्रार्थना अर्थों में इसका प्रयोग होता है तब इसे वि0लि0 लकार कहते हैं। परंतु जब इसका प्रयोग आशीर्वाद अर्थ में होता है तब यह आशीर्लिङ लकार होता है।

----------X----------

इस प्रकार लिङ लकार के दो भेदों से इसकी संख्या पुनः दस हो जाती है। ये लगार जिन कालों या वृत्तियों के बोधक होत हैं उनका वर्णन द्रष्टव्य है –

लट् लकार	वर्तमान काल	वर्तमाने लट्[22]
लिट् लकार	परोक्ष अनद्यतन भूत	परोक्षे लिट्[23]
लुट् लकार	अनद्यतन भविष्यत् काल	अनद्यतने लुट्[24]
लृट् लकार	सामान्य भविष्यत् काल	लृट् शेषे च[25]
लोट् लकार	आज्ञा, उपदेश आदि	लोट् च[26]
लङ् लकार	अनद्यतन भूत	अनद्यतने लङ्[27]
विधिलिङ्	प्रवर्तना आदि	विधि निमंत्रण[28]
आर्शीवादर्लिङ्	आर्शीवाद	आशिषिलिङलोटौ[29]
लुङ्	सामान्य भूतकाल	लुङ्[30]
लृङ्लकार	हेतु हेतुमद्भावार्थ	लिङ्निमित्तेलिङ्क्रियातिपत्तौ[31]

संस्कृत भाषा में तीन वाच्यों का निर्धारण किया गया है। कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाव वाच्य। सकर्मक धातुओं से कर्तृवाच्य एवं कर्मवाच्य का प्रयोग होता है तथा अकर्मक धातुओं से कर्तृवाच्य एवं भाववाच्य का तिङन्त क्रियापदों का प्रयोग तीन पुरूषों के आधार पर होता है यथा – प्रथम पुरूष, मध्यम पुरूष, उत्तम पुरूष। कर्तृवाच्य में अस्मद् उत्तम पुरूष का, युष्मद, मध्यम पुरूष का वाचक होता है। शेष शब्द प्रथम पुरूष के बोधक होते हैं। संस्कृत भाषा में तीन वचन होते हैं एक वचन, द्विवचन, बहुवचन। एक वस्तु के बोध के लिए एकवचन, दो वस्तुओं के बोध हेतु द्विवचन एवं दो से अधिक वस्तुओं के बोध हेतु बहुवचन का प्रयोग होता है। कभी कभी आदर व्यक्त करने के लिए एक वचन या द्विवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग होता है ।

संस्कृत के तिङन्त क्रियारूप पद की दृष्टि से दो प्रकार के होते हैं परस्मैपदी एवं आत्मनेपदी। कुछ धातुओं का प्रयोग केवल परस्मैपद में तथा कुछ का केवल आत्मनेपद में होता है। परन्तु कुछ धातुएं जिनका प्रयोग दोनों में होता है, उभयपदी कहलाती हैं ।

इस अध्याय में सौन्दर्यलहरी में प्रयुक्त धातुओं को गणों के अनुसार रखा गया है। धातुओं से निर्मित क्रियापदों को प्रत्येक गण में अकारादि क्रम से रखा गया है। प्रत्येक क्रियापद में धातु को अनुबन्ध सहित दिखाया गया है। धातु का अर्थ, गण, पद, सोप0 है अथवा निरू0, सेट् है अथवा अनिट् है ये सारी सूचना प्रत्येक क्रियापद में दी गई है। तिङन्त क्रियापद में धातु से कौन सा लकार, पुरूष और वचन है इसका विवेचन भी क्रिया पद में किया गया है ।

सौन्दर्य लहरी में 63 पाणिनीय धातुओं का प्रयोग किया गया है, जो लगभग सभी गणों की है। भ्वादिगण की सर्वाधिक 23 धातुओं का प्रयोग किया गया है। भ्वा0 में भू धातु का प्रयोग सर्वाधिक 12 बार हुआ है। अदादिगण की 6 धातुओं का प्रयोग हुआ जिसमें अस् का प्रयोग मुख्यता से हुआ है। जुहात्यादिगण

22 वै0सि0कौ0 (2151)
23 वै0सि0कौ0 (2171)
24 वै0सि0कौ0 (2185)
25 वै0सि0कौ0 (2193)
26 वै0सि0कौ0 (2194)
27 वै0सि0कौ0 (2205)
28 वै0सि0कौ0 (2208)
29 वै0सि0कौ0 (2195)
30 वै0सि0कौ0 (2218)
31 वै0सि0कौ0 (2229)

www.ignited.in

की केवल 2 धातुओं का प्रयोग किया गया है। जिसमें डुधाञ् का प्रयोग ज्यादा दिखाई देता है। दिवादिगण की 8 धातुओं का प्रयोग किया गया है, जिसमें मन् धातु का प्रयोग अधिकता से हुआ है। स्वा0 प्रकरण की 2 धातुओं का प्रयोग है। 6 धातुएं तुदा0ग0 में से हैं। 3 धातुओं का प्रयोग किया गया है। चुरादिगण में से 10 धातुऐं गृहीत हैं तथा कथ का प्रयोग ज्यादा दिखाई देता है। सौन्दर्य लहरी में तिङन्त रूपों का विवेचन उपर्युक्त क्रम से प्रस्तुत है –

1. अभूत्[32] → निरु0 भू√सत्तयाम्[33] भ्वा0प0से0

√भू, लुङ् लकार प्रथम पुरूष, एकवचन ।

2. [34]अनुधावन्ति→सोप0√धावु गतिशुद्धयोः[35] भ्वा0उ0से0

अनु पूर्वक√धातु, लट् लकार, प्रथम पुरूष बहुवचन ।

3. [36]अजनि→ निरु0√जनी प्रादर्भाव[37] भ्वा0 आ0 से0

√जनी, लुङ लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन ।

4. [38]उपनयसि→सोप0√णी०ञ् प्रापणे[39] भ0उ0अ0

उप पूर्वक णी०ञ प्रापणें लट् लकार, मध्यम पुरूष, एकवचन ।

5. [40]कल्पन्ते→ निरु0√कृपू सामर्थ्ये [41] भवा0आ0वे0

√कृपू लट् लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन ।

6. [42]जज्ञे→ निरु0 जनी प्रार्दुभावे[43] भ्वा0आ0से0

√जनी, लिट् लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन ।

7. [44]जयति→ निरु0 √जि जये[45] भ्वा0प.अ0

√जि लट् लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन ।

8. [46]जयतः→ निरु0 √जि जये[47] भ्वा0प0अ0

√जि लट् लकार, प्रथम पुरूष, द्विवचन ।

9. दहति[48]→ निरु0√दह भस्मीकरणे[49] भ्वा0प0उ0

√दह् लट् लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन ।

10. दृश्यन्ते[50]→ निरु0दृशिरे् प्रेक्षणे[51] भ्वा0प0उ0

√दृशिर् लट् लकार, प्रथम पुरूष, बहुवचन ।

11. ददताम्[52]→ निरु0√दद् दाने[53] भ्वा0आ0से0

√दद् लोट् लकार प्रथम पुरूष एकवचन ।

12. नयति[54]→ निरु0 णीम् प्रापणे[55] भ्वा0उ0अ0

√णीम् लट् लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन ।

13. निवसति[56] सोप0√वस् निवासे [57] भ्वा0प0अ0

निपूर्वक √वस् लअ्लकार, प्रथम पुरूष एकवचन ।

14. निषेवे[58]→सोप0√षेव् सेवने[59] भ्वा0आ0से0

नि पूर्वक√षेवृ लट् लकार इत्तम पुरूष एकवचन ।

15. प्रभवति[60]→सोप0√भू सत्तयाम्[61] भ्वा0प0से0

प्र पूर्वक√भू लट् लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन ।

16. पिवेयम्→ निरु0√पा पाने[62] भ्वा0प0अ0

√पा लोट् लकार उत्तम पुरूष, एकवचन।

17. पिबतां[63]→ निरु0√पा पाने[64] भ्वा0प0अ0

√पा वि0ल0 लकार, उत्तम पुरूष, एकवचन।

18. परिहसति[65]→सो0√हसे हसने[66] भ्वा0 प0 से0

32 सौ0ल0 2/23
33 वै0सि0कौ0 भू [1]
34 सौ0ल0 पृ0 2/13
35 वै0सि0कौ0 धावु [601]
36 सौ0ल0 पृ0 4/75
37 वै0सि0कौ0 जनी [1149]
38 सौ0ल0 पृ0 4/54
39 वै0सि0कौ0 णीञ् [901]
40 सौ0ल0 2/12
41 वै0सि0कौ0 कृपू [762]
42 सौ0ल0 4/41
43 वै0सि0कौ0 जनी [1149]
44 सौ0ल0 2/64, 2/93
45 सौ0ल0 3/89[561]
46 सौ0ल0 4/87
47 वै0सि0कौ0 जि [561]
48 सौ0ल0 3/39
49 वै0सि0कौ0 दह [991]
50 सौ0ल0 3/83
51 वै0सि0कौ0 दृशिर्
52 सौ0ल0 3/89
53 वै0सि0कौ0 दद् [17]
54 सौ0ल0 3/19
55 वै0सि0कौ0 णीञ् [901]
56 सौ0ल0 4/36
57 वै0सि0कौ0 वस् [1005]
58 सौ0ल0 4/40
59 वै0सि0कौ0 षेवृ [501]
60 सौ0ल0 1/4, 4/5
61 वै0सि0कौ0 भू [1]
62 सौ0ल0 2/100
63 वै0सि0कौ0 या [925]
64 सौ0ल0 1/63
65 वै0सि0कौ0 या [925]
66 सौ0ल0 2/45

www.ignited.in

परि उपसर्ग√हस् लट् लकार प्रथम पुरूष, एकवचन।

19. परिषमति[67]→सो0√णम् प्रहत्वे शब्दे च[68] भ्वा0प0अ0

परिउपसर्ग √णम् लट् लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन।

20. प्रवष्ये[69]→सोप0√वक्ष[70] रोषे भ्वा0प0से0

प्र उपसर्ग √वक्ष लट् लकार उत्तम पुरूष, एकवचन।

21. पिबन्ति[71]→ निरु0√पा पाने[72] भ्वा0प0अ0

√पा, लट् लकार प्रथम पुरूष, बहृवचन।

22. परिवहति[73]→सोप0√वह प्रापणे[74] भ्वा0प0अ0

परिउ0√ लट् लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन।

23. भवति[75] निरु0√भू सत्तयाम् [76] भ्वा0प0से0

भू लट् लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन।

24. भवन्ति[77] निरु0 √ सत्तयाम्[78] भ्वा0 न0 से0

√भू लट् लकार, प्रथम पुरूष, बहुवचन।

25. भवेत→ निरु0√भू सत्तयाम[79] भ्वा0प0से0

√भू वि0ल0 लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन।

26. भवतु[80] → निरु0√भू सत्तयाम्[81] भ्वा0प0से0

√भू लोट् लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन।

27. भावयति[82]→ निरु0 भू सत्तयाम्[83] भ्वा0प0से0

√भू विच प्रत्यय, धातु संबा, लट् लकार प्रथम पुरूष एकवचन।

28. भजति[84]→ निरु0√सेवायाम्[85] भ्वा0उ0से0

√भज् लट् लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन।

29. भजन्ति[86]→ निरु0√भज सेवायाम्[87] भ्वा0उ0से0

√भज लट् लकार, प्रथम पुरूष, बहुवचन।

30. भजन्ते[88]→ निरु0√भज सेवायाम[89] भ्वा0उ0से0

√भज लट् लकार प्रथम पुरूष बहुवचन।

31. भजे[90]→ निरु0√भज सेवायाम[91] भ्वा0उ0से0

√भज लट् लकार उत्तम पुरूष एकवचन।

32. भ्रमयति[92]→ निरु0√भ्रम् चलने[93] भ्वा0उ0से0

√भ्रम् लट् लकार प्रथम पुरूष एकवचन ।

33. भ्रमयसि[94]→ निरु0√भ्रम् चलने[95] भ्वा0उ0से0

√भ्रम् लट् लकार उत्तम पुरूष एकवचन।

34. वहति[96]→ निरु0√वह प्रापणे[97] भ्वा0उ0से0

[3]√वह लट् लकार, प्रथम पुरूष एकवचन।

35. व्रजति[98]→ निरु0√ब्रज[99] भ्वा0उ0से0

√व्रज लट् लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन।

36. विराजन्ते[100]→ सोष0√राजृ दीप्तौ[101] भ्वा0उ0से0

वि पूर्वक√राजृ लट् लकार, प्रथम पुरूष, बहुवचन।

37. विहरते[102]→ सोपसर्गी√हृम् हरणे[103] भ्वा0उ0अ0

67 वै0सि0कौ0 हसे [721]
68 सौ0ल0 4/46, 4/64
69 वै0सि0कौ0 णत्र् [981]
70 सौ0ल0 4/63
71 सौ0ल0 4/63
72 वै0सि0कौ0 पा [925]
73 सौ0ल0 2/75
74 वै0सि0कौ0 वह[1004]
75 सौ0ल0 1/1, 3/17
76 वै0सि0कौ0 भू [1]
77 सौ0ल0 3/18
78 वै0सि0कौ0 भू [1]
79 सौ0ल0 3/25
80 वै0सि0कौ0 भू [1]
81 सौ0ल0 3/71, 4/79, 4/79, 4/27
82 वै0सि0कौ0 भू [1]
83 सौ0ल0 4/2, 2/26

84 वै0सि0कौ0 भज[998]
85 सौ0ल0 3/33
86 वै0सि0कौ0 भज[998]
87 सौ0ल0 2/28
88 वै0सि0कौ0 भज[298]
89 सौ0ल0 4/19
90 वै0सि0कौ0 भ्रम्[850]
91 सौ0ल0 4/98
92 वै0सि0कौ0 भ्रम्[850]
93 सौ0ल0 3/2, 4/68, 1/74
94 वै0सि0कौ0 वह[1004]
95 सौ0ल0 1/26
96 वै0सि0कौ0 भ्रज, [253]
97 सौ0ल0 3/69
98 वै0सि0कौ0 राजृ,[822]
99 सौ0ल0 1/101
100 वै0सि0कौ0 हृम्,[899]
101 सौ0ल0 2/18

www.ignited.in

वि उपसर्ग√ह् लट् लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन ।

38. स्मरति[104]→ √स्मृ चिन्तायाम्[105] भ्वा0प0अ0

√स्मृ लट् लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन।

39. स्खलसि[106]→ √स्खल संचलने[107] भ्वा0प0से0

√स्खल लट् लकार, मध्यम पुरूष, एकवचन।

40. सेवे[108]→ √पूवृ सेवने[109] भ्वा0आ0से0

√षेणृ लट् लकार, उत्तम पुरूष, एकवचन।

41. हरतु[110]→ √हम् हरणे[111] भ्वा0उ0अ0

√ह्वभ् लोट् लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन।

42. फलतु[112]→ √फल निष्पतौ[113] भ्वा0प0से0

√फल लोट् लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन।

संदर्भ

1. अपरोक्षानुभूति शंकराचार्य के संदर्भ में सम्पा0 डा0 जानकी देवी नाग प्रकाशक, जवाहर नगर, नई दिल्ली प्रकाशन 2015
2. आदि शंकराचार्य जीवन और दर्शन सम्पा0 जयराम मिश्र, लोक भारती प्रकाशन, 15–। महात्मागांधी मार्ग, इलाहाबाद प्र0 स0 2016
3. आदि शंकराचार्य की भाष्य पद्धति सम्पा0 डा0 लेखराम शर्मा, इन्दु प्रकाशन, 29/5 शक्ति नगर, नई दिल्ली 110007
4. मध्य सिद्धान्त कोमुदी, सम्पा0 श्री विश्वनाथ शास्त्री प्रभाकर, मोती लाल बनारसी दास बंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली 110007 संस्करण 2014
5. लघु सिद्धान्त कौमुदी सम्पा0 प0 श्री हरेकान्त मिश्र भारतीय विद्या प्रकाशन जवाहर नगर बंग्लो रोड दिल्ली 110007 संस्करण 2014
6. वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी सम्पा0 प0 राम चन्द्र झा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी संस्करण 1998
7. शंकराचार्य सम्पा0 राममूर्ति शर्मा, भारती भवन, सिविल लाइन्स, मुरादाबाद

102 वै0सि0कौ0 स्मृ[933]
103 सौ0ल0 2/29
104 वै0सि0कौ0 स्खल[544]
105 सौ0ल0 2/37
106 वै0सि0कौ0 पेवृ,[501]
107 सौ0ल0 2/72
108 वै0सि0कौ0 ह्वम्,[899]
109 सौ0ल0 2/61
110 सौ0ल0 2/72
111 वै0सि0कौ0 ह्वम्,[899]
112 सौ0ल0 2/61
113 वै0सि0कौ0 फल[530]

Corresponding Author

Dr. Sunita Kumari*

Assistant Professor, Department of Sanskrit Government College, Nangal Chaudhary, Haryana

skjhooda@gmail.com

www.ignited.in